JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जिला सिरमौर के गिरीआर व गिरीपार की लोक संस्कृति व लोक संगीत–एक अध्ययन

Mrs. Amritanjali Sharma
Ph.D Scholar Of Baru Sahib University H.P

पृष्ठभूमिः– प्रकृति की सुरम्य वादियों से सुसज्जित सिरमौर एक प्राकृतिक सुषमा से ओत–प्रोत कुदरत का एक नायाब उपहार है। सिरमौर अर्थात सिर का ताज सिरमौर रियासत के लिए उपयुक्त शब्द है क्योंकि 1815 ई0 से पूर्व सिरमौर रियासत सतलुज तथा यमुना नदी के मध्य प्रमुख रियासतों में से एक थी। हिमाचल प्रदेश के लिए प्रवेश द्वार होने के कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। सिरमौर शब्द का प्रयोग यद्यपि 12 वीं शताब्दी के बाद हुआ है, किंतु इस क्षेत्र का वर्णन हमें इससे पूर्व भी मिलता है। ऋग्वेद में प्रारंभिक आर्यों का सरस्वती तथा आपया नदी के किनारे बसने का वर्णन है। सिरमौर में आपया (मारकंडा) का उद्गम स्थान है तथा सिरमौर में सरस्वती अब भूमिगत है। सिरमौर की तपोभूमि जामू का टीला, में आर्य ऋषि जमदग्नि (1500-1300 ईसा पूर्व) तपस्या करते थे। माँ रेणुका तथा भगवान परशुराम का संबंध भी रेणुका क्षेत्र से रहा है। रेणुका आज भी हिंदुओं का पवित्र तीर्थ स्थान है, तथा भगवान परशुराम सर्वमान्य देवता है। सिरमौरी ताल से जुड़ी कई गाथाएं एक विशेष स्थान रखती है। गिरी नदी पर घटित "नटनी के श्राप" की गाथा जिसने की सिरमौरी ताल को जलमग्न कर दिया था। गाथा के अनुसार उस समय का शासक सूर्यवंशी मदन सिंह था। वह नृत्य तथा क्रीडाओं में बड़ी रुचि लेता था। एक बार राजस्थान से नटों का प्रसिद्ध दल उसकी इस रुचि को सुनकर उसके राज्य में आया। राजा ने नटो को चुनौती दी कि अगर कोई नट नृत्य करते रस्सी पर ओका और पोका के बीच रस्सी लांघ कर उसे आर–पार कर देगा, तो वह अपना आधा राज्य उसे दे देगा। इस जानलेवा कठिन चुनौती को एक नटनी ने स्वीकार कर लिया। दोनों सिरों पर रस्सी बांधी गई। नटनी ने प्रथम बार उसे कुशलता से पार किया, किंतु वापसी में जब वह आधे रास्ते में थी, तो राज कर्मचारी ने इस भय से कि आधा राज्य ना गंवाना पड़े, रस्सा काट दिया । नटनी नदी में गिर पडी। घायल अवस्था में उसे बाहर निकाला गया। मरने से पूर्व उसने श्राप दियाः–

आर ओका, पार पोका,
बीच दूबे, सिरमौर लोका।

नटनी का श्राप कहिए या आकस्मिक घटना, कहते हैं कि अति वृष्टि से गिरी नदी में उसके बाद भयंकर बाढ आई जिसमें पूरा राज परिवार, व राजधानी 1182 ईसवीं में जलमगन हो गई। सिरमौरी ताल के जलमग्न होने के बाद सिरमौर की राजधानी बदलती गई। सिरमौरी ताल प्राचीन में इतना महत्वपूर्ण रहा होगा कि सिरमौरी ताल से सिरमौर का नाम पड़ा होगा। सिरमौरी ताल की घटना के बाद सिरमौर का कोई शासक नहीं रहा।

सिरमौर जनपद दो भागों में विभाजित है। वह है गिरीपार व गिरीआर। इस जनपद को दो भागों में विभाजित करने में गिरी गंगा की महत्वपूर्ण भूमिका है और इस भू–भाग को दो भागों में विभक्त करने में गिरी गंगा (गिरी नदी) ही प्रमुख मापदण्ड है। प्रस्तुत है गिरीपार और गिरीआर की लोक संस्कृति व लोक संगीत की के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी।

लोक संस्कृतिः–जिला सिरमौर अधिकांशतः बाहरी हिमाचल के खंड शिवालिक में स्थित है। जिला सिरमौर को भौगोलिक दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। यह है गिरीपार, गिरीआर व कयारदा दून या दून घाटी। महासुवी क्षेत्र के सिरमौर जिला की लोक संस्कृति अपने आप में एक अलग पहचान बनाए हुए है। यहां का जनजीवन सुबह से शाम, जन्म से मृत्यु तक लोक संगीत से बंधा हुआ है। सिरमौर तथा आसपास के क्षेत्रों में लोक संस्कृति व लोक मान्यताओं के चलते वर्ष का

आरंभ चैत्र मास से माना जाता है और उसके बाद वर्ष भर विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाए जाते है जिसका वर्णन इस प्रकार से है।

1. चैत्र मास में नवसंवत नवरात्र पर्व, चित्रालो पर्व तथा जिणिया की गाथा पूरे चैत्र में संक्राति से सक्रांति तक कोली या डूम समाज के लोग घर–2 जाकर गाते हैं। उनका वाद्य यन्त्र ढाकुला होता है। सुहागन अपनी चूड़ी वाद्य यन्त्र में बान्धती है लोग अनाज व पैसे देते हैं।
2. बैशाख मास में अक्षय तृतीया व जगह–2 बिशु का मेला लगता है जिसमें शाठी व पांशी ठोन्ठा नृत्य व तीर कमान का खेल होता है।
3. ज्येष्ठ मास में मूल नक्षत्र पर सिड़कू बनाय जाते है तथा इस दिन तान्त्रिक तन्त्र–मन्त्र–यन्त्र पूजा व सिद्धि करते है।
4. आषाढ़ में उफनती नदी के पास शाठी व पांशी सम्प्रदाय के लोग "मण" का पर्व मनाते हैं। बकरे की खाल में तीम्बर के दाने भरकर डांगरे से एक पक्ष तीबर को काटते हैं तथा दूसरा पक्ष उसकी रक्षा करते हैं।
5. श्रावण में हरयालटी का पर्व व कोईलू देवता की पूजा फसल की रक्षा के लिए करते है। इसे हरयालटी की संगरांद कहते है।
6. भाद्रपद में भादो पञ्चमी (पांजुई) में विरस का गीत गाया जाता है। जन्माष्टमी, गूगा नवमी भी इसी मास में मनाई जाती है।
7. आश्विन में शारदीय नवरात्रे, दूर्गाष्टमी, दशहरा पर्व मनाया जाता है।
8. कार्तिक में नई दिवाली का पर्व धूम–धाम से हारूल गायन, सीया राणि महिमा, कुन्ती देवती गायन, भिऊरी गाथा, खेल (कोमिक) आदि मनाया जाता है। गोवर्द्धन पूजा तथा भैया दूज भी मनाते हैं। इस पर्व में तेल पक्की, शाकुली, मूड़ा, अखरोट खिलाये जाते है। रेणूका मेला भी इसी मास में मनाया जाता है।
9. मार्गशीर्ष में बुढ़ि दिवाली नई दिवाली की तरह ही मनाई जाती है।
10. पोष के महीने में गिरीपार में पौष का त्योहार पांच दिन साजी तक मकर संक्राति तक मनाया जाता है जिसमें साल भर पाले बकरे, खाडू को काटा जाता है तथा मांस सुखाकर पूरी सर्दी में खाते है तथा मेहमान वाजी होती है।
11. माघ मास में आठ प्रविष्ठे को खोड़ा पर्व मनाया जाता है। पूरे माघ में नाटियां होती है।
12. फाल्गुन में अधयावणी, तथा होली पर्व मनाया जाता है।

सिरमौर की संस्कृति यहां के रीति रिवाज और त्यौहारों में देखने को मिलती है। यहां का खानपान अनूठा है और अनूठी है यहां की वेशभूषा। सिरमौर रियासत प्राचीनतम रियासतों में से एक रही है। इसलिए यहां आज भी जनजाति की झलक देखने को मिलती है जो कि विशेष रूप से त्यौहार में और देवी देवताओं के किसी कार्यक्रम में देखने को मिलती है, जहां साक्षात देवी देवताओं के दर्शन होते हैं और वह अपने होने का एहसास लोगों को साक्षात रूप में देते हैं। यहां के लोगों की आस्था देवी देवताओं को लेकर अटूट है। इस क्षेत्र में लोगों की अनूठी जीवन शैली का वर्णन इस प्रकार से किया जा सकता हैः–

देव संस्कृति व धार्मिक आस्थाः–गिरीपार क्षेत्र का नाम करण का मुख्य कारण है कि जो जिला मुख्यालय नाहन से गिरी नदी से पार का क्षेत्र है उसे गिरीपार कहते है और जो गिरी नदी से आर का नाहन के साथ का क्षेत्र है उसे गिरीआर कहते है। सिरमौर क्षेत्र की सर्वोच्च चोट है उसे चूड़धार कहते है। चूडधार का नामकरण चुड़िया नामक दैत्य के नाम पर पड़ा। दूसरा कारण भारत के उतर क्षेत्र में जो पर्वत श्रृंखलाऐं वे बृष भाकर है जो कि शंकर भगवान का वाहन माना जाता है। बृषभ (बैल) के पृष्ठ भाग में जो पीठ और गर्दन के मध्य उभरा हुआ भाग है उसे स्थानीय भाषा में चूड़ कहते है अतः बृष भाकर उतरीय पर्वत की यह चूड़ है। अतः इस तीर्थ का नाम चूड़धार पडा। चूड़धार में शिरगुल महाराज विराजमान है जो गिरीपार व गिरीआर के सबसे अधिक आराध्य देव है व आस्था के प्रतीक है। लाखो लागों के आराध्य होने से पूरे वर्ष में बैसाख मास से मार्गशीर्ष की सक्रांति तक लोगों का तांता लगा रहता है। गिरीआर और गिरीपार दोनो क्षेत्र के शिरगुल महाराज आराध्य देव है। गांव–गांव में शिरगुल महाराज के मन्दिर बने है लोग आस्था के साथ पूजा करते है। शिमला, सोलन, जौनसार उतराखण्ड के भी शिरगुल महाराज आराध्य देव है।

अन्य देव व देवियाँः—गिरीपार के हरिपुरधार की शिखर चोटी पर भंगायणी माता का मन्दिर स्थित है। गिरीआर के लोगो की भी यह आराध्य देवी है। भंगायणी माता की देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रसिद्धि है तथा लाखो लागों की आस्था मां भंगायणी में है। यहां पूरे वर्ष श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है। इसके अतिरिक्त बिजट महाराज कुचियाट, बिजाई देवी जो कि शिरगुल महाराज के भाई व बहने हैं। इसके अतिरिक्त उतराखण्ड के हनोल मूल स्थान महासू देवता के मन्दिर भी गिरीपार के अनन्य गांवो में आस्था के प्रतीक है तथा ठाहरी देवी भदवांश, नायणा देवी, जसकूल, जेठो गोऊरो, भैरो आदि देवता गिरीपार में मान्य व आस्था के देवता है परन्तु गिरीआर में नगण्य है। गिरीपार में रेणुका तीर्थ विश्व प्रसिद्ध है तथा भगवान परशुराम जी का मन्दिर रेणुका जी की प्राकृतिक झील एक पाप नाशक तीर्थ है उनकी मानता गिरीआर व गिरीपार सर्वत्र है।

गिरीआर में जमटा में बालासुन्दरी, कालीस्थान (नाहन) माता, कटासन माता, त्रिलोकपुर में सिद्धपीठ बालासुन्दरी माता, ललिता माता, ला माता, भ्रागेश्वरी माता, त्रिभुवणी माता आदि प्रसिद्ध माताओं के मन्दिर गिरीआर क्षेत्र में हैं। जहां पूरे वर्ष श्रद्धालु लोग अपनी मन्नत लेकर दर्शन करने आते हैं। सरांह क्षेत्र में भूरेश्वर महाराज का मन्दिर लोगों की आस्था का केन्द्र है। इसके अतिरिक्त गुगा महाराज की मान्यता गिरीआर और गिरीपार क्षेत्र में सर्वत्र है। पांवटा का गुरूद्वारा, बडूसाहिब तथा राजगढ़ सिक्ख सम्प्रदाय के आस्था के केन्द्र हैं।

पूजा प्रद्धतिः— गिरीपार के पूजा पद्धति की विशेषता यह है कि पूरे भारत से हटकर यहां की पूजा पद्धति अलग से है, जिसकी अलग विद्या पहाड़ी शैली में है। सीज, हूम, गोदान, तीर्थान, नवग्रह पूजा यहां की स्थानीय भाषा में होती आई है। समय के साथ अब वैदिक पूजा का प्रचलन हो रहा ह और पुरानी पद्धति लुप्त हो रही है। इस क्षेत्र में भटाक्षरी लिपि का सांचा प्राचीन समय से प्रचलित है, जिस ग्रन्थ के द्वारा दोष, ज्योतिष, खुजणा, गणना, जातक भविष्य, विवाह वास्त, भूमि शोधन तथा अन्त्येष्ठी आदि से सम्बन्धित ज्ञान है। पूजा, विवाह, बास्त के मन्त्र भी स्थानीय भाषा में ही है। वास्तव में भटाक्षरी कश्मीरी विद्या है। इसके अतिरिक्त नजर उतारना झाड़—फूक करना, विषहर, पात मन्त्र, तुम्बी चलाना, रोट गांव की रक्षा का विधान वाण मन्त्र, गोरख कुण्डली, धार वान्धना, मोहणी मन्त्र गिरीपार क्षेत्र में है। गिरीआर क्षेत्र में रमल विद्या, टुणा टोटका आदि कम

मात्रा में ही पाया जाता है। देवताओं की पूजा में दिवेल, पूजेल, नारायण कला, दषमावतार, लिंडाष्टक आदि पाजे कथचाड़ को गोधृत में मिलाकर धुनियारे से पूजा होती। विश भुजङी आदि भी पूजा में प्रयोग होते है। गुगा महाराज की पूजा बार डमरू के द्वारा होती है। महासू की पूजा मौन रूप मे श्वास रोककर की जाती है।

जातियांः– यहां पर भाट जाति (ब्राह्मण), खश (राजपूत) लौहार, बाड़ी, ढाकी, नटुआ जो कि देवालयों व विशेष पर्व में वजन्त्रियों का काम करते है तथा नाई का काम भी करते है। इसके अतिरिक्त कोली, डूम, चमार, चनाल आदि जाति भी पाई जाती है। वणिक जाति गिरीपार में नाम मात्र है। गिरीआर में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, सुनियार के अतिरिक्त उपरोक्त जातियाँ गिरीआर में भी पाई जाती है। मुस्लिम तो गिरीपार में नगण्य है न ही इसाई तथा जैन जातियाँ है। सिक्ख जाति के कुछ लोग क्षेत्र में हैं। यहां पर जातियों का आपसी ताना–बाणा सराहनीय था। एक दूसरे का सहयोग बड़े प्रेम से करते है। कुछ राजनैतिक दलों ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लोगों में जातिवाद का जहर घोला है जो कि निन्दनीय हैं।

वेष–भूषाः– गिरीपार में पारम्परिक परिधान पुरूषों में लोईया, सूथण, टोपी आदि सदियों से चला आ रहा है। शीत ऋतु में विशेषकर यह परिधान जो कि ऊन के बने होते है, कमर में रस्सी (पागोई) बांधी जाती तथा बर्फ के बीच में चलने के लिए खोरशा पांव में पहना जाता है तथा अन्य मौसम में ज्यादातर पजामा (सूथण½] कुर्ता, गर्मियों में कच्छा बनियान पहनी जाती है। महिलाऐं सलवार–कुर्ता तथा सिर पर ढाठू पहना जाता है, सदरी पहनने का भी प्रचलन है। समय के साथ अब पेंट–कोट जीन्स आदि का जमाना आ गया है।

पारम्परिक फसलें व खान पानः– गिरीआर में पहनावा आधुनिक ही है। गिरीपार में जो, गेहूं, मक्की, उड़द, राजमा, मसरी, कुलथी, धान, ओगला आदि पारम्परिक फसले हैं तथा मंडुवा, चोलाई कावणी, चिणई आदि जैविक फसले बोई जाती है। इसके अतिरिक्त आलू, गागुटी, लहसुन, अदरक, प्याज, टमाटर, मटर, फ्रासवीन आदि नगदी फसलें उगाई जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, आड़ू, पलम, खीरे, खुमानी, खट्टा जामूर, नीबू आदि फल भी होते है। गिरीआर में जिमीकंद, आम, सन्तरा के अतिरिक्त उपरोक्त कुछ फसले उगाई जाती है। गिरीपार के खानपान में पटण्डे–खीर, विलोई, धुरोटी–भात, सिड़कू–घी, तेल पक्की, असकली, चिलटे, लुशके, सुतौउले, ढीन्डकी, उलौवले आदि पकवान बनाय जाते है। गिरीआर में पटण्डे, पूड़े–खीर, पूरी–छोले आदि का रिवाज है। शहद को भी घी के साथ खाया जाता है। दही बड़ा, रायता आदि का भी प्रचलन है।

पारम्परिक मेले व त्यौहारः– छः ऋतु बारह मास , गिरीपार में होता है। कुछ मेले और त्यौहारों का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा रहा है जो हर महीने में क्रमवार इस प्रकार से होते हैः–

लोक संगीतः– हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जनपद के लोक संगीत की एक विशेष परंपरा रही है। जो जन मानस के मनोरंजन के साथ प्रदेश की समृद्ध संस्कृति की धरोहर भी है। यह कहना अनुचित न होगा कि "सिरमौरी" लोक गीतों में सांगीतिक तत्वों की बहुलता इस तथ्य को स्पष्ट कर देती है कि यहां का लोक संगीत अति प्राचीन है और इसी की एक नींव पर शास्त्रीय संगीत का भवन अवस्थित हैं। यहां के लोक गीतों में भीमप्लासी, खमाज, भैरवी, बिलावल, जै जैवन्ती ,दुर्गा, भूपाली व पहाडी आदि रागों की छाया स्पष्टतरू झलकती है। पारम्परिक लोक गीतों की सरंचनाएं कम से कम तीन तथा अधिकाधिक डेढ सप्तकीय हैं। लोकगीतों का मुखडा प्रायरू दूसरी, नवी तथा चौदहवीं मात्रा से आरंभ किया जाता है। कुछ एक लोकगीत प्रथम मात्रा (सम) से प्रारंभ किए जाने का प्रचलन भी सुनने को मिलता है। अधिकांश लोकगीतों का आरंभ तार सप्तक के षडज से अवरोही क्रम में गाने की अनूठी परंपरा है। अनिबद्ध प्रकार में 'झूठी' गीतों में षडज, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत तथा निषाद स्वरों का न्यास क्रिया श्रोताओं को अचंभित कर देता है। झूरी, भृतरहरी, रामायण, महाभारत रासा, गीह, पवाडा, साके और हारूलों की गान शैलियां सिरमौरी संस्कृति की एक अलग पहचान बनाए हुए हैं जिसमें छिपे संवाद एवं वार्तालाप अति मार्मिक व मनोहारी है जो गागर में सागर भरने के समान हैं। लोक वाद्यों में ढोल, नगाडा, हुडक, शहनाई, खंजरी, बांसुरी, करनाल तथा रणसिंगा का प्रयोग अनेक तीज त्योहारों, लोक त्योहारों में विशेष महत्वपूर्ण महत्व रखता है। लोकगीतों के साथ 14 मात्रा करयाला ताल अथवा चाचर ताल, द्रुतलय में रासा गीतों के साथ खेमटा ताल सदृश स्वांगटी गीह ताल की वादन प्रक्रिया के विभिन्न रूप सुनकर मन आनंदित हो उठता है। 'गीह' अथवा 'मुंजरा' गायन में गायकों द्वारा दोनों हाथों की हथेलियों पर पांच तालियां प्रदर्शित करने का प्रयोग सहजता के साथ निभाया जाता है। अर्थात 16 मात्राओं के ताल के साथ पांच तालियां दर्शाने की क्रिया जटिल होते हुए भी सहज प्रतीत होती है। इस प्रकार की क्रिया से ही सिरमौर के लोक संगीत की खूबसूरती की अलग पहचान बनती है और इसकी खूबसूरती सिरमौर, हिमाचल में ही नहीं अपितु पूरे विश्व भर में अपनी अलग छाप छोडता है । यह संस्कृति जितनी पुरानी है, उतनी ही अलग और खूबसूरत है। इस क्षेत्र में अलग–अलग प्रकार के लोक संगीत का इस प्रकार वर्गीकरण किया जा सकता हैः–

गिरीपार का लोकसंगीतः–

गिरीपार क्षेत्र को जनजाति का दर्जा दिया गया है। गिरीपार की गायन शैली अनुकरणीय है। यह ऐतिहासिक, धार्मिक, वीरता और आप बीती घटनाओं पर आधारित होती है।

गायन शैलीः– झूरी, हारूल, सिया और गंगी आदि लोकगीत गए जाते हैं।

नृत्य शैलीः– माला, गीह और मुजरा नृत्य किये जाते हैं।

वाद्य शैलीः– नगाडा, ढोलक, बांसुरी, थाली, हारमोनियम और रणसिंघा बजाते हैं।

गिरीआर का लोकसंगीतः–

गिरीआर में पहाडी और हरियाणवी दोनों क्षेत्रों की झलक देखने को मिलती है।

नृत्य शैलीः– गीह, पडुआ, मुजरा और नाटी आदि नृत्य किये जाते हैं ।

गायन शैलीः– पडुआ, भजन, झुरी, प्रेम गीत और मौसम के अनुसार लोकगीत को गाया जाता है।

वाद्य शैलीः– ढोलकी, शहनाई, चिमटा, खंजरी, नगाडा और हुडक आदि बजाये जाते हैं ।

तलहटी पर हरियाणा की बोली और नाच गाना देखने को मिलता है ।

गायन व वाद्य यन्त्रः– गिरीपार की गायन शैली अनुकरणीय है। ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हारूल गीत रासा नृत्य के साथ गाया जाता है। हारूल अधिकतर करूणा रस युक्त होती है। वीर रस की भी बहुत सी हारूल दिवाली जैसे महापर्व में गायी जाती है। कुछ विभत्स रस की हारूल भी है। रामायण की सीता राणि की गाथा प्रातः ब्रहामूहर्त में विशेष पर्व पर गाई जाती है तथा महाभारत की कुन्ती देवती की गाथा भी सीयाराणि की गाथा के बाद गायी जाती है। एकल नृत्य ढोलक की थाप पर रामायण, महाभारत, भर्तुहरि, कुछ प्रेम रस युक्त गीत बैठकर गाये है और एक आदमी या औरत नृत्य करती है। कुछ फिल्मी गीत भी पहाड़ी शैली में गाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त भारतों अधिकतर सर्दियों के मौसम में रात्रि को एक या दो आदमी गाते है बाकि सुनते है इसमें नृत्य नहीं होता। पैजाकर, भतृंहरि वाला बवीर का भारत गाए जाते है तथा झूरी, गंगी लुवाणे भाभी आदि गीत भी गाये जाते है, ये बिना नृत्य के होते है। मण्डुवे की गुड़ाई के समय गुड़ाई भी होती है तथा ठूण्डू कमराऊ की हारूल भी गायी जाती है। धार्मिक पूजा व गोविचार आदि भी गाने की अलग विद्या है। परन्तु गिरीआर में अपनी भी गायी हुई गायन शैली नहीं है वहां कुछ पहाड़ी कुछ हरयाण्वी तथा कुछ पंजाबी आदि खिचड़ी गायन होता है।

गिरीपार में रणसिंहा, कुनाल, दमानु, नगाड़ा, ढोल, हुलक, वांसुरी, थाली कांसी की हारमोनियम, चिमटा आदि वाद्य यन्त्र बजाए जाते हैं। उनकी बजाने की विद्या अनुकरणीय व श्रवणीय होती है। पूराने जानकार छत्तीस प्रकार की ताले बजाते है जिसमें शब्द, रसा, घी, जड़भरत स्वर्गीरोहण, फुलणिया, देव वटवाल, देव टालना, पुजेवल, नबद आदि प्रमुख है लींबर, हजुला, शान्त आदि कृत्यों में अलग–2 विद्या है जन्म से मृत्यु तक के वाद्य यन्त्र अलग–2 विद्या में बजाये जाते है।

सिरमौर के लोकगीतः–गिरी पार की गायन शैली अनुकरणीय है। यह ऐतिहासिक धार्मिक वीरता और आपबीती घटनाओं पर आधारित होती थी। इस क्षेत्र में गाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के लोक गीत निम्नलिखित हैः–

- हारुल
- सिया
- जूरी
- गांधी
- लुभाने व
- भाभी आदि लोकगीत गाए जाते हैं।

निष्कर्षः– सिरमौर जन पद जो कि अपने आप में विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक विरासत अपने आप में संजोए हुए है आज भी लोक संस्कृति और लोक संगीत के मामले में अन्य लोगों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहां की लोक संस्कृति लोगों की देवी देवताओं के प्रति आस्था के इर्द गिर्द घुमती है। लोगों की जीवन शैली देव संस्कृति, धार्मिक आस्था, पूजा पद्धति पर निर्भर करती है और इसी संस्कृति के के कारण समाज विभिन्न प्रकार की जातियों में बंटा हुआ है। यहां की वेश भूषा और खाप पान भी एक अलग महत्व रखता है।

यहां के अधिकतर लोकगीत त्योहारों, मौसम, वीरगाथा, प्रेमगाथा और आपबीती पर सुनने को मिलते हैं। यहां के लोग फसलों के हिसाब से त्योहारों को मनाते हैं और गीतों को गाते हैं। कुछ गीतों को वह किसी विशेष व्यक्ति की आपबीती की रूपरेखा के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

शुनी रोको लोको
तुई करता गौर
बोडा ओस बाठिया मेरा सिरमौर

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. राही, डॉ0 ईश्वरदास 2021, सिरमौर लोकगीतों के आईने में, आरती प्रकाशन, साहित्य सदन इंदिरा नगर, लालकुआं, नैनीताल उत्तराखंड, 262402
2. शर्मा, डॉ0 रूप कुमार 1991, सिरमौर दर्पण गायत्री प्रिंटर्स जालंधर
3. शर्मा, डॉ रूप कुमार 1994, सिरमौर का इतिहास राजनैतिक और सांस्कृतिक, अग्रवाल प्रिंटर्स प्रेस, नाहन।